रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम प्रकट करने का वास्तविक स्वरूप

रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम प्रकट करने का वास्तविक स्वरूप

ख़ुत्बा जुमा (21 सितम्बर 2012 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसरिहिल अज़ीज़

नाम पुस्तक : **रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम प्रकट करने का वास्तविक स्वरूप**

ख़ुत्बा जुमा (21 सितम्बर 2012 ई.)
हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम
अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसरिहिल अज़ीज़

अनुवादक : *अन्सार अहमद बी.ए.बी.एड.मौलवी फ़ाज़िल*

संख्या : 20000

प्रथम संस्करण : हिन्दी

वर्ष : अक्टूबर 2012 ई.

प्रकाशक : नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान

प्रेस : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान (143516)
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क

कार्यालय

नज़ारत दावत इलल्लाह/इस्लाह व इरशाद

मुहल्ला अहमदिया क़ादियान-143516
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)
दूरभाष - 01872-220757, 222763

प्रातः 10 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक

TOLL FREE - 18001802131

प्राक्कथन

ताज़ा घटना है कि इस्लाम और इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के विरुद्ध वैर और द्वेष निकालने का निन्दनीय विश्वव्यापी प्रयास किया गया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और पाश्चात्य सभ्यता की आड़ में अपवित्र भाषा का उपयोग, दूषित बयान, इस्लामी शिक्षा और नबी करीम (स.अ.व.) के पवित्र जीवन पर निराधार आरोपों तथा नकारात्मक प्रोपेगन्डा और आप (स.अ.व.) के उच्च और श्रेष्ठ शिष्टाचार तथा इस्लाम पर नास्तिकतापूर्ण आलोचनाओं को वैध रखा गया है।

विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह ने 21, सितम्बर 2012 ई. स्थान-मस्जिद बैतुल फ़ुतूह, मार्डन, बर्तानिया में अपने जुमा के ख़ुत्बे में फिल्म INNOCENCE OF ISLAM और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध फ्रांस में बेहूदा कार्टून के प्रकाशन पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट की। इस ख़ुत्बे में आप ने एक अहमदी मुसलमान की प्रतिक्रिया के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला है। आप के इस ख़ुत्ब-ए-जुमा को पम्फ्लट के रूप में सर्वसाधारण के मार्ग-दर्शन हेतु प्रकाशित किया जा रहा है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस ख़ुत्बे का स्वयं भी ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और इसका मुफ्त वितरण करें।

मुनीरुद्दीन शम्स
एडीशनल वकील अत्तसनीफ़
लन्दन
अक्टूबर 2012 ई.

रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम प्रकट करने का वास्तविक स्वरूप

सय्यिदिना अमीरुल मोमिनीन मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह बिनसरिहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा जुमा

दिनांक, 21 सितम्बर 2012 ई. मुताबिक 21, तबूक 1391 हिज्री शम्सी

स्थान - मस्जिद बैतुल फ़ुतूह, मॉर्डन लन्दन

أَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ
الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ
وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝۵۶ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝۵۷ (अलअहज़ाब-57-58)

इन आयतों का अनुवाद यह है कि निश्चय ही अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत (दया) भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो, तुम भी उस पर दुआ और अधिकाधिक सलाम भेजो। निश्चय ही वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उन पर इस लोक (संसार) में भी ला'नत डाली है तथा परलोक में भी तथा उसने उनके लिए अपमानजनक अज़ाब तैयार किया है।

आजकल मुस्लिम संसार में, इस्लामी देशों में भी तथा संसार के भिन्न-भिन्न देशों में रहने वाले मुसलमानों में भी इस्लाम विरोधी तत्वों के इस नितान्त अधम, घृणित और अन्यायपूर्ण कृत्य पर खेद और क्रोध की लहर प्रवाहित हो गई है। इस खेद और क्रोध को प्रकट करने में मुसलमान निश्चय ही सत्य पर हैं। मुसलमान चाहे वह इस बात का बोध रखता है या नहीं कि आंहज़रत (स.अ.व.) का वास्तविक स्थान क्या है, आप (स.अ.व.) की मान-मर्यादा के लिए प्राण न्योछावर करने के लिए तत्पर हो जाता है। इस्लाम के शत्रुओं ने आप (स.अ.व.) के संबंध में जो अश्लीलता और असत्य पर आधारित फिल्म बनाई है और उस फ़िल्म में आप (स.अ.व.) के सन्दर्भ में जिस अन्यायपूर्ण अनादर का प्रदर्शन किया गया है उस पर प्रत्येक मुसलमान का खेद और क्रोध एक स्वाभाविक बात है।

वह मानवता का उपकारी, समस्त संसारों के लिए दया और ख़ुदा तआला का प्रियतम, जिसने अपनी रातों को भी प्रजा की चिन्ता में जगाया, जिसने प्रजा को विनाश से सुरक्षित रखने के लिए उस पीड़ा को प्रकट किया और स्वयं को इस प्रकार चिन्ताग्रस्त किया कि उस सर्वशक्ति सम्पन्न ख़ुदा ने आप को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि क्या तू उन लोगों के लिए कि ये अपने सृष्टि करने वाले स्रष्टा को नहीं पहचानते, विनाश में डाल लेगा? मानवता के इस महान उपकारी के बारे में ऐसी अपमान और अनादरपूर्ण फ़िल्म पर निश्चय ही एक मुसलमान का हृदय रक्त-रंजित होना चाहिए था और हुआ तथा सर्वाधिक कष्ट एक अहमदी मुसलमान को पहुँचा कि हम आंहज़रत (स.अ.व.) के सच्चे प्रेमी और सच्चे दास के अनुयायियों में से हैं जिसने हमें आंहज़रत (स.अ.व.) के सर्वोच्च पद का बोध प्रदान किया। अत: हमारे हृदय इस कृत्य पर विदीर्ण हैं, हम ख़ुदा के समक्ष नतमस्तक हैं कि इन आततायियों के प्रतिकार और बदला ले, उन्हें वह भयानक और शिक्षाप्रद निशान बना जो संसार के रहने तक उदाहरण बन जाए। हमें तो युग के इमाम ने रसूल (स.अ.व.) के प्रेम का इस प्रकार से बोध कराया है कि जंगल के

सांपों और जानवरों से मैत्री हो सकती है, परन्तु हमारे सरदार और पेशवा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनादर करने वाले तथा उस पर दृढ़तापूर्वक कार्यरत रहने वाले से हम मैत्री नहीं कर सकते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि :-

"मुसलमान वह जाति है जो अपने नबी करीम (स.अ.व.) के मान के लिए प्राण देती है और वह उस अपमान और अनादर से मरना उत्तम समझती है कि ऐसे लोगों से हृदयों की सफाई करे, तथा उनकी मित्र बन जाए जिनका रात-दिन यही कार्य है कि वे उनके रसूले करीम (स.अ.व.) को गालियां देते हैं और अपनी पत्रिकाओं, पुस्तकों और विज्ञापनों में उनका नाम नितान्त निरादर से लेते हैं तथा उन्हें नितान्त अपवित्र शब्दों से याद करते हैं"

आप फ़रमाते हैं -

"स्मरण रखें कि ऐसे लोग अपनी जाति के भी हितैषी नहीं है क्योंकि ये उनके मार्ग में कांटे बोते हैं और मैं सच-सच कहता हूँ कि यदि हम जंगल के सांपों और निर्जन स्थानों के हिंसक पशुओं से मैत्री कर लें तो यह संभव है परन्तु हम ऐसे लोगों से मैत्री नहीं कर सकते जो ख़ुदा के पवित्र नबियों की प्रतिष्ठा में अपशब्दों का प्रयोग करने से नहीं रुकते। वे समझते हैं गाली-गलौज और अपशब्दों में ही विजय है परन्तु प्रत्येक विजय आकाश से आती है।"

फिर फ़रमाया कि :-

"पवित्र भाषा का प्रयोग करने वाले लोग अपने पवित्र कलाम की बरकत से अन्ततः हृदयों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं परन्तु गन्दे स्वभाव के लोग इससे अधिक कोई कला नहीं रखते कि देश में उपद्रव के रूप में फूट और भेदभाव पैदा करते हैं ...... "

फ़रमाया कि -

"अनुभव भी साक्ष्य देता है कि ऐसे अपशब्दों का प्रयोग करने वाले लोगों का अंजाम अच्छा नहीं होता। ख़ुदा का स्वाभिमान अपने उन प्रियजनों के लिए अन्ततः कोई काम दिखा देता है। "

(चश्मा-ए-मा'रिफ़त रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 23, पृष्ठ 385 से 387)

वर्तमान युग में अख़बारों और विज्ञापनों के साथ मीडिया के अन्य साधनों को भी इस बेहूदा काम में प्रयोग किया जा रहा है। अतः ये लोग जो अपनी हठधर्मी के कारण ख़ुदा तआला से मुक़ाबला कर रहे हैं इन्शा अल्लाह उसकी पकड़ में आएंगे। ये हठधर्मी और ढीठपन से अपने अन्यायपूर्ण कृत्य का प्रदर्शन करते चले जा रहे हैं।

जब सन् 2006 ई. में डेनमार्क के दुष्प्रकृति रखने वाले लोगों ने आंहज़रत (स.अ.व.) के बारे में बेहूदा चित्र बनाए थे तो उस समय भी मैंने जमाअत का जहां उचित प्रतिक्रिया प्रदर्शित करने की ओर ध्यानाकर्षण कराया था, वहां यह भी कहा था कि ये दुष्ट लोग पहले भी पैदा होते रहे हैं तथा इसी पर अन्त नहीं होगा, इस विरोध इत्यादि जताने से कोई अन्तर नहीं पड़ेगा जो इस समय मुसलमानों की ओर से हो रहा है अपितु भविष्य में भी ये लोग ऐसे दुष्कृत्य करते रहेंगे। हम देख रहे हैं कि ये लोग इस से भी अधिक अशिष्टता और अन्याय पर उतर आए हैं और उस समय से आहिस्ता-आहिस्ता उनकी यह गतिविधि बढ़ती ही जा रही है।

अतः इस्लाम के मुक़ाबले पर उनकी यह पराजय और हार है जो उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर इस अश्लीलता पर तत्पर कर रही है, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि स्मरण रखें कि ये लोग अपनी जाति के भी हितैषी नहीं हैं। यह बात एक दिन उन जातियों के लोगों पर भी प्रकट हो जाएगी, उन पर स्पष्ट हो जाएगा कि आज ये लोग जो असभ्यातपूर्ण कार्यवाहियां कर रहे हैं वह उनकी जाति के लिए हानिप्रद हैं कि ये लोग स्वार्थी और आततायी हैं। इन्हें केवल अपनी इच्छाओं को पूर्ण

करने के अतिरिक्त किसी बात से कोई मतलब नहीं।

इस समय तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर राजनीतिज्ञ और दूसरा वर्ग भी कुछ स्थानों पर स्पष्ट तौर पर और अधिकतर दबे शब्दों में उनके पक्ष में भी बोल रहा है और कभी-कभी मुसलमानों के पक्ष में भी बोल रहा है, परन्तु स्मरण रखें कि अब विश्व एक ऐसा सार्वभौमिक ग्राम बन चुका है कि यदि बुराई को स्पष्ट तौर पर बुराई न कहा गया तो ये बातें उन देशों के अमन और शान्ति को भी बरबाद कर देंगी फिर जो ख़ुदा की लाठी चलेगी वह पृथक है।

युग के इमाम की यह बात स्मरण रखें कि प्रत्येक विजय आकाश से आती है और आकाश ने यह निर्णय कर छोड़ा है कि तुम जिस रसूल का अपमान करने का प्रयास कर रहे हो उसने संसार पर विजयी होना है और विजयी भी ऐसा जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- हृदयों पर विजय प्राप्त करके आना है क्योंकि पवित्र कलाम का प्रभाव होता है, पवित्र कलाम को आवश्यकता नहीं है कि कठोरता का प्रयोग किया जाए या अशलीलतापूर्ण बातों का उत्तर अशलीलतापूर्ण बातों द्वारा दिया जाए। ये अपशब्द और गाली गलौज का सिलसिला जो इन लोगों ने आरम्भ किया हुआ है यह ख़ुदा ने चाहा तो शीघ्र समाप्त हो जाएगा और फिर इस जीवन के पश्चात ऐसे लोगों से ख़ुदा ताला स्वयं निपटेगा।

ये आयतें जो मैंने पढ़ी हैं उनमें भी अल्लाह तआला ने मोमिनों को उनके दायित्व की ओर ध्यान दिलाया है कि तुम्हारा काम इस रसूल पर दरूद और सलाम भेजना है। इन लोगों की अश्लील बातों, अन्यायों और उपहास से उस महान नबी की मान-मर्यादा पर कुछ अन्तर नहीं पड़ता। यह तो ऐसा महान नबी है जिस पर अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते भी दरूद भेजते हैं। मोमिनों का कार्य है कि अपनी जीभों को उस नबी पर दरूद भेजने से तर रखें, जब शत्रु अश्लीलतापूर्ण बातों में बढ़े तो पहले से बढ़कर दरूद और सलाम भेजें।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ علی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔ اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرٰھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبراھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔

यही दरूद है और यही नबी है संसार में जिसकी विजय प्रारब्ध हो चुकी है।

अत: जहां एक अहमदी मुसलमान इस अश्लीलतापूर्ण कृत्य पर घृणा, खेद और क्रोध को प्रकट करता है वहां एक अहमदी उन लोगों का भी तथा अपने-अपने देशों के शासकों का भी इन बेहूदा बातों से रोकने की ओर ध्यानाकर्षण कराता है और कराना चाहिए। एक अहमदी सांसारिक दृष्टि से यथासंभव प्रयास करता है कि इस षडयंत्र के विरुद्ध संसार को वास्तविकता से अवगत करे, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के सुन्दर पहलू दिखाए, अपने प्रत्येक कर्म से आप के सुन्दर आदर्श को प्रकट करके, इस्लाम की शिक्षा और आप के उत्तम व्यवहारों का साक्षात आदर्श बन कर विश्व को दिखाए। हां साथ ही यह भी जैसा कि मैंने कहा कि दरूद और सलाम की ओर भी पहले से बढ़कर ध्यान दे। पुरुष, स्त्री, युवा, वृद्ध और बच्चा अपने वातावरण को दरूद और सलाम से भर दे, अपने व्यवहार को इस्लामी शिक्षा का व्यावहारिक आदर्श बना दे। अत: यह सुन्दर प्रतिक्रिया है जिसका हमने प्रदर्शन करना है।

शेष रही बात इन आततायियों की तो इनके अंजाम के बारे में ख़ुदा तआला ने दूसरी आयत में बता दिया है कि रसूल को कष्ट देने वाले अथवा वर्तमान युग में सच्चे मोमिनों का हृदय आप (स.अ.व.) के अस्तित्व के हवाले से कष्ट पहुँचा कर विदीर्ण करने वालों से ख़ुदा तआला स्वयं निपट लेगा। इन लोगों पर इस संसार में ख़ुदा तआला की फटकार है और इस फटकार के कारण वे और अधिक मलिनता में लिप्त होते चले जाएंगे और मृत्योपरान्त ऐसे लोगों के लिए ख़ुदा तआला ने अपमानित करने वाला अज़ाब निर्धारित किया हुआ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसी विषय को वर्णन किया है कि ऐसे अपशब्द निकालने वाले लोगों का अन्त

अच्छा नहीं होता। अतः ये लोग इस संसार में अल्लाह तआला की फटकार के रूप में तथा मृत्योपरान्त अपमानित करने वाले अज़ाब के रूप में अपने परिणाम और अन्त को देखेंगे।

अन्य मुसलमानों को भी अल्लाह तआला की शिक्षानुसार, उसके आदेशानुसार यह प्रतिक्रिया प्रदर्शित करना चाहिए कि अपने देशों, अपने क्षेत्रों और अपने वातावरणों को दरुद और सलाम से भर दें। यह प्रतिक्रिया है।

यह प्रतिक्रिया तो व्यर्थ है कि अपने ही देशों में अपनी ही सम्पत्तियों को आग लगाई जाए या अपने ही देश के नागरिकों की हत्या की जाए या ऐसी रैलियां निकलें कि पुलिस को विवश होकर अपने ही नागरिकों पर फ़ायरिंग करना पड़े तथा अपने ही स्वजन मर रहे हों।

अख़बारों और मीडिया के माध्यम से जो सूचनाएं बाहर आ रही हैं उन से मालूम होता है कि अधिकांश शिष्ट और सभ्य यूरोपीय लोगों ने भी इस दुष्कृत्य पर रोष और अप्रसन्नता प्रकट की है तथा घृणा व्यक्त की है। वे लोग जो मुसलमान नहीं है परन्तु उनके स्वभाव में शालीनता है उन्होंने अमरीका में भी और यहां भी उसे पसन्द नहीं किया परन्तु लीडरशिप एक ओर तो यह कहती है कि यह ग़लत है तथा दूसरी ओर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को आड़ बना कर उसका समर्थन भी करती है। ये दोहरी नीति नहीं चल सकती। स्वतंत्रता से सम्बद्ध क़ानून कोई आकाशीय ग्रन्थ नहीं है। मैंने अमरीका में अपने भाषण में वहां के राजनीतज्ञों को यह भी कहा था कि सांसारक लोगों के बनाए हुए कानून में दोष हो सकता है, गलितयां हो सकती हैं, कानून बनाते हुए कुछ पहलू दृष्टि से ओझल हो सकते हैं क्योंकि मनुष्य अन्तर्यामी नहीं परन्तु अल्लाह तआला अन्तर्यामी है उसके द्वारा निर्मित कानूनों में कोई दोष नहीं होता। अतः अपने कानून को ऐसा पूर्ण न समझें कि उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता, उसमें कोई कमी-बेशी नहीं हो सकती। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रा का क़ानून तो है परन्तु न किसी देश के क़ानून में, न यू.एन.ओ (U.N.O) के चार्टर में यह क़ानून है कि किसी व्यक्ति को यह स्वतंत्रता नहीं

होगी कि दूसरे की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुँचाए, यह कहीं नहीं लिखा कि अन्य धर्मों को बुज़ुर्गों के उपहास की अनुमति नहीं होगी कि इस से विश्व-शान्ति भंग होती है, इस से नफ़रतों के लावे फूटते हैं, इस से जातियों और धर्मों के मध्य दूरियां बढ़ती चली जाती हैं। अतः यदि स्वतंत्रता का क़ानून बनाया है तो एक व्यक्ति की स्वतंत्रता का क़ानून तो अवश्य बनाएं, परन्तु दूसरे व्यक्ति की भावनाओं से खेलने का कानून न बनाएं। यू.एन.ओ. भी इसलिए असफल हो रही है कि ये असफल क़ानून बना कर समझते हैं कि हमने बहुत बड़ा काम कर लिया है। ख़ुदा तआला का कानून देखें ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि दूसरों की मूर्तियों को भी बुरा न कहो कि इस से समाज की शान्ति भंग होती है, तुम मूर्तियों को बुरा कहोगे तो वे न जानते हुए तुम्हारे सर्वशक्ति सम्पन्न ख़ुदा के बारे में अनुचित शब्दों का प्रयोग करेंगे जिससे तुम्हारे हृदयों को दुख होगा, हृदयों के वैमनस्य बढ़ेंगे, लड़ाई-झगड़े होंगे, देश में उपद्रव फैलेगा। अतः यह नितान्त सुन्दर शिक्षा है जो इस्लाम का ख़ुदा देता है, इस संसार का ख़ुदा देता है, इस सम्पूर्ण जगत का ख़ुदा देता है, वह ख़ुदा यह शिक्षा देता है जिसने पूर्णतम शिक्षा के साथ अपने प्रिय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) को संसार के सुधार के लिए तथा प्रेम और भ्रातृभाव स्थापित करने के लिए भेजा है, जिसने आप (स.अ.व.) को "रहमतुल्लिल आलमीन" के नाम के साथ समस्त सृष्टियों के लिए दया बना कर भेजा है।

अतः संसार का शिक्षित वर्ग, शासक तथा राजनीतिज्ञ वर्ग विचार करे कि क्या इन कुछ असभ्य लोगों को सख़्ती से न दबा कर आप लोग भी इस उपद्रव का भाग तो नहीं बन रहे, संसार की सामान्य जनता विचार करे कि दूसरों की धार्मिक भावनाओं से खेल कर तथा संसार के इन कुछ कीड़ों तथा मलिनताओं में लिप्त लोगों की हां में हां मिला कर कहीं आप लोग भी संसार की शान्ति को भंग करने में भागीदार तो नहीं बन रहे।

हम अहमदी मुसलमान संसार की सेवा के लिए कोई भी कमी नहीं

छोड़ते, अमरीका में रक्त की आवश्यकता पड़ी, पिछले वर्ष हम अहमदियों ने बारह हज़ार बोतलें एकत्र करके दीं, इस वर्ष वे पुनः एकत्र कर रहे हैं। आजकल यह प्रक्रिया चल रही थी, मैंने उन्हें कहा कि हम अहमदी मुसलमान तो जीवन देने के लिए अपना रक्त दे रहे हैं और तुम लोग अपने इन दृष्कृत्यों से तथा उन दुष्कृत्य करने वालों की हां में हां मिला कर हमारे हृदय रक्त-रंजित कर रहे हो। अतः एक अहमदी मुसलमान का और सच्चे मुसलमान का तो यह अमल है और ये लोग जो समझते हैं कि वे न्याय स्थापित करने वाले हैं उन्हीं के एक वर्ग का यह काम है।

मुसलमानों पर तो यह आरोप लगाया जाता है कि वे अनुचित कार्य कर रहे हैं। यह सही है कि कुछ प्रतिक्रियाएं ग़लत हैं, परन्तु अल्लाह तआला के निष्पाप नबियों का उपहास और घृष्टता में अग्रसर होना भी एक बड़ा पाप है। अब देखा-देखी पिछले दिनों फ्रांस की पत्रिका को भी पुनः उबाल पैदा हुआ है, उसने भी पुनः असभ्यतापूर्ण कार्टून प्रकाशित किए हैं जो पहले से भी बढ़कर असभ्यता प्रकट कर रहे हैं। ये सांसारीक लोग संसार को ही सब कुछ समझते हैं, परन्तु नहीं जानते कि यह संसार ही उनके विनाश का सामान है।

मैं यहां यह भी कहना चाहूँगा कि संसार के एक बहुत बड़े भू-भाग पर मुसलमान सरकारें स्थापित हैं, संसार का एक बहुत बड़ा क्षेत्र मुसलमानों के अधीन है। बहुत से मुसलमान देशों को ख़ुदा तआला ने प्राकृतिक सम्पदाएं भी प्रदान की हैं मुसलमान देश U.N.O. के सदस्य भी हैं, क़ुर्आन करीम जो पूर्ण जीवन-पद्धति है उसे मानने वाले तथा पढ़ने वाले भी हैं तो फिर मुसलमान सरकारों ने प्रत्येक स्तर पर इस सुन्दर शिक्षा को संसार पर प्रकट करने का प्रयास नहीं किया, ये क्यों नहीं करते?

क़ुर्आन की शिक्षानुसार ये संसार के समक्ष क्यों प्रस्तुत नहीं करते कि धार्मिक भावनाओं से खेलना तथा ख़ुदा के नबियों का अपमान करना अथवा इस का प्रयास करना भी एक अपराध है तथा बहुत बड़ा अपराध और पाप है। विश्व-शान्ति के लिए अनिवार्य है कि इसे भी U.N.O. के शान्ति चार्टर

का भाग बनाया जाए कि कोई सदस्य देश अपने किसी नागरिक को अनुमित नहीं देगा कि दूसरों की धार्मिक भावनाओं से खेला जाए, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर विश्व-शान्ति भंग करने की अनुमित नहीं दी जाएगी, परन्तु खेद कि इतने समय से यह सब कुछ हो रहा है, कभी मुसलमान देशों का ठोस संयुक्त प्रयास नहीं हुआ कि समस्त नबियों, आंहज़रत (स.अ.व.) अपितु प्रत्येक नबी के मान और मर्यादा के लिए संसार को अवगत करें और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसे स्वीकार कराएं। यद्यपि यू.एन.ओ (U.N.O.) के शेष निर्षयों की भांति इस पर भी अमल नहीं होगा, पहले भी शान्ति चार्टर का कौन सा पालन हो रहा है परन्तु कम से कम एक बात रिकार्ड में तो आ जाएगी, इस्लामी देशों का संगठन (OIC) स्थापित तो है परन्तु उन के द्वारा कभी कोई ठोस प्रयास नहीं हुआ जिससे संसार में मुसलमानों की प्रतिष्ठा स्थापित हो। मुसलमान देशों के राजनीतिज्ञ अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए प्रत्येक प्रकार के प्रयास में व्यस्त हैं यदि ध्यान नहीं तो धर्म की श्रेष्ठता का यदि हमारे नेताओं की ओर से सतत् प्रयास होते तो जन सामान्य की यह अनुचित प्रतिक्रिया भी प्रकट न होती जो आज उदाहरणतया पाकिस्तान में हो रही है अथवा अन्य देशों में हुई है। उन्हें मालूम होता कि इस कार्य के लिए हमारे लीडर नियुक्त हैं और वे इस कार्य को सम्पन्न करने का प्रयास करेंगे। आंहज़रत (स.अ.व.) की मान-मर्यादा स्थापित करने के लिए और समस्त नबियों की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए विश्व-मंच पर इस प्रकार उठेंगे कि इस संसार को स्वीकार करना पड़ेगा कि ये लोग जो कह रहे हैं सत्य और वास्तविकता है।

फिर पश्चिमी देशों में और संसार के प्रत्येक क्षेत्र में मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या है जो वहां रहती है। धार्मिक दृष्टि से तथा संख्या की दृष्टि से संसार में मुसलमान दूसरी सबसे बड़ी शक्ति हैं यदि ये ख़ुदाई आदेशों पर चलने वाले हों तो प्रत्येक दृष्टि से महान शक्ति बन सकते हैं और ऐसी अवस्था में इस्लाम-विरोधी शक्तियों को साहस ही नहीं होगा कि ऐसी

कष्टदायक गतिविधियां कर सकें या उसकी कल्पना भी करें।

बहरहाल मुसलमान देशों के अतिरिक्त संसार के प्रत्येक देश में मुसलानों की एक बड़ी संख्या है। यूरोप में लाखों की संख्या में तो केवल तुर्क लोग ही अबाद हैं इसी प्रकार यहां अन्य मुसलमान जातियां भी आबाद हैं, एशिया से यहां मुसलमान आए हुए हैं, यू.के में भी आबाद हैं, अमरीका में भी आबाद हैं, कनाड़ा में आबाद हैं, यूरोप के प्रत्येक देश में आबाद हैं। यदि ये सब निर्णय कर लें कि अपने वोट उन राजनीतज्ञों को देंगे जो धार्मिक सहिष्णुता को प्रकट करें और उनका प्रकटन न केवल मौखिक हो अपितु उनका व्यावहारिक तौर पर भी प्रकटन हो रहा हो और वे ऐसे व्यर्थवादियों, असभ्यतापूर्ण बकवास करने वालों या अश्लील फिल्में बनाने वालों की निन्दा करेंगे तो इन सांसारिक शासनों में ही एक वर्ग इस अश्लीलता-असभ्यता के विरोध में खुल कर बोलने वाला मिल जाएगा।

अत: मुसलमान यदि अपने महत्व को समझें तो संसार में एक क्रान्ति पैदा हो सकती है, वे देशों के अन्दर धार्मिक भावनाओं के सम्मान के कानून बनवा सकते हैं परन्तु दुर्भाग्य है कि इस ओर ध्यान नहीं है। जमाअत अहमदिया जो ध्यान दिलाती है, उस के विरोध में कटिबद्ध हैं और शत्रुओं के हाथ दृढ़ कर रहे हैं अल्लाह तआला मुसलमान लीडरों, राजनीतिज्ञों तथा धर्म के विद्वानों को बुद्धि प्रदान करे कि वे अपनी शक्ति को सुदृढ़ करें, अपने महत्त्व को पहचानें और अपनी शिक्षा की ओर ध्यान दें।

ये लोग जो आंहज़रत (स.अ.व.) पर व्यर्थ आरोप लगाते हैं, आपत्तियां उठाते हैं और जिन्होंने यह फिल्म बनाई है या इसमें काम किया है उनके नैतिक स्तर का अनुमान तो मीडिया में दी गई जानकारियों से ही हो सकता है। कहा जाता है कि सबसे अधिक रोल एक क़िब्ती (प्राचीन मिस्रियों की ईसाई नस्ल) ईसाई का है जो अमरीका में रहता है नकोला बसीले (NAKOULA BASSELEY NAKOULA) या इसी प्रकार का उसका कोई नाम है या साम बसीले (SAM BACILE) कहलाता है। बहरहाल उसके बारे में लिखा

है कि उसकी अपराधिक पृष्ठ-भूमि (CRIMINAL BACKGROUND) है, अपराधी है, यह फ्राड के कारण 2010 ई. में जेल में भी रह चुका है, दूसरा व्यक्ति जिसने फिल्म का निर्देशन (DIRECTION) किया है वह कामोद्दीपक फिल्मों (PORNOGRAPHIC MOVIES) का निर्देशक (DIRECTOR) है इसमें जो अन्य कलाकार सम्मिलित हैं वे सब कामोद्दीपक फिल्मों के अदाकार (ACTORS) हैं। ये इनके चरित्र के स्तर हैं तथा कामोद्दीपकता की जो सीमाएं हैं उनकी तो मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता। ये लोग किस मलिनता और समलता में लीन हैं और आरोप उस हस्ती पर करने चले हैं जिसके सर्वोत्कृष्ट शिष्टाचार और पवित्रता की ख़ुदा तआला ने साक्ष्य दी।

अत: यह अश्लीलतापूर्ण कृत्य करके इन्होंने निश्चय ही ख़ुदा तआला के अज़ाब को आमंत्रित किया है और करते चले जा रहे हैं। इसी प्रकार इस फिल्म को SPONSOR करने वाले भी ख़ुदा तआला के अज़ाब से नहीं बच सकते। इन में एक पर ईसाई पादरी भी सम्मिलित है जो भिन्न-भिन्न समयों में अमरीका में अपनी झूठी प्रसिद्धि के लिए क़ुर्आन इत्यादि को जलाने का भी प्रयास करता रहा है।

اَللّٰھُمَّ مَزِّقْھُمْ کُلَّ مُمَزَّقٍ وَسَحِّقْھُمْ تَسْحِیقًا

मीडिया में कुछ ने निन्दा करने का भी प्रयास किया है और साथ ही मुसलमानों की प्रतिक्रिया की भी निन्दा की है। उचित है, ग़लत प्रतिक्रिया की भी निन्दा होना आवश्यक है परन्तु यह भी देखें कि पहल करने वाला कौन है।

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा मुसलमानों का दुर्भाग्य है कि यह सब कुछ मुसलमानों की एकता और नेतृत्व के अभाव के कारण हो रहा है, रसूल से प्रेम के दावे के बावजूद ये लोग धर्म से बहुत दूर हटे हुए हैं। दावा तो अवश्य है परन्तु धर्म का कोई ज्ञान नहीं है, सांसारक दृष्टि से भी कमज़ोर होते जा रहे हैं। किसी मुसलमान देश ने किसी देश से भी सशक्त प्रतिक्रिया प्रस्तुत नहीं की और की भी है तो इतनी कमज़ोर कि मीडिया ने उसे कोई महत्त्व नहीं

दिया और यदि मुसलमानों की प्रतिक्रिया पर कोई समाचार लगाया भी है तो यह 1.8 बिलियन मुसलमान बच्चों की भांति प्रतिक्रिया दिखा रहे हैं। जब कोई संभालने वाला न हो तो फिर इधर-उधर फिरने वाले ही होते हैं फिर प्रतिक्रियाएं भी बच्चों वाली ही होती हैं। इस दृष्टि से एक कटाक्ष भी कर दिया, परन्तु वास्तविकता भी स्पष्ट कर दी। ख़ुदा करे अब भी मुसलमानों को शर्म आ जाए।

ये लोग जिनकी धार्मिक आँख तो अंधी है, जिन्हें नबियों के महत्त्व का ज्ञान ही नहीं है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पद को गिरा कर भी ख़ामोश रहते हैं, उन्हें तो मुसलमानों के नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के लिए भावनाओं का प्रकटन बच्चों की तरह की प्रतिक्रिया ही दिखाई देगी परन्तु जैसा कि मैंने कहा कि सन् 2006 ई. में भी मैंने ध्यान दिलाया था कि इस ओर ध्यान दें और एक ऐसा ठोस कार्यक्रम बनाएं कि भविष्य में किसी को ऐसा दुष्कृत्य करने का साहस न हो। काश कि मुसलमान देश यह सुन लें और जो उन तक पहुँच सकता है तो हर अहमदी को उन तक यह बात पहुँचाने का भी प्रयत्न करना चाहिए। चार दिन प्रतिक्रिया दिखाकर बैठ जाने से तो इस समस्या का समाधान नहीं होगा।

एक स्थान से यह प्रस्ताव भी आया था, लोग भी भिन्न-भिन्न प्रस्ताव भेजते रहते हैं कि समस्त संसार के मुसलमान वकील एकजुट होकर पटीशन (PETITION) करें। काश कि मुसलमान वकील लोग जो अन्तर्राष्ट्रीय पद रखते हैं इस संबंध में विचार करें, इसकी संभावनाओं पर विचार करें कि हो भी सकता है कि नहीं या कोई अन्य मार्ग निकालें। ऐसी अधमता और दुष्कृत्य को कब तक होता देखते रहेंगे और अपने देशों में तोड़-फोड़ की प्रतिक्रिया प्रदर्शित करके बैठ जाएँगे। उस का इस पश्चिमी संसार पर तो कोई प्रभाव नहीं होगा या उन फिल्म निर्माताओं पर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यदि उन देशों में निर्दोषों पर आक्रमण करेंगे, धमकी देंगे या मारने का प्रयास करेंगे या दूतावासों पर आक्रमण करेंगे तो यह कृत्य तो इस्लाम के विपरीत है, इस्लाम इसकी बिल्कुल आज्ञा नहीं देता। इस अवस्था में तो आंहज़रत (स.अ.व.)

पर स्वयं आरोप के अवसर प्रदान करेंगे।

अत: इसका उत्तर कठोरता नहीं है। इसका उत्तर वही है जो मैं वर्णन कर चुका हूं कि अपने कर्मों का सुधार और उस नबी पर दुआ और सलाम जो मानवता का मुक्तिदाता है। सांसारिक प्रयासों के लिए मुसलमानों की एकता, पश्चिमी देशों में रहने वाले मुसलमानों का अपनी वोटिंग पावर को स्वीकार कराना। बहरहाल जमाअत के लोग जहां-जहां भी हैं इस पद्धति पर कार्यरत हों तथा अपने ग़ैर अहमदी मित्रों को भी इस पद्धति पर चलाने का प्रयत्न करें कि अपनी तथा अपने वोट की शक्ति जो उन दोशों में है स्वीकार कराएं। आंहज़रत (स.अ.व.) के जीवन के पहलुओं को भी संसार के सामने सुन्दर रूप में प्रस्तुत करें।

आज ये लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का राग अलापते हैं, शोर मचाते हैं कि इस्लाम में तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और बोलने का अधिकार ही नहीं है और उदाहरण आजकल की मुसलमान दुनिया के देते हैं कि मुसलमान देशों में वहां के लोगों को, नागरिकों को स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती, यदि प्राप्त नहीं होती तो उन देशों का दुर्भाग्य है कि इस्लामी शिक्षा पर अमल नहीं कर रहे। इसका इस्लामी शिक्षा से तो कोई संबंध नहीं है। हमें तो इतिहास में लोगों के निर्भीक और निसंकोच होकर आंहज़रत (स.अ.व.) को सम्बोधित करने, मान-सम्मान को पाँव तले रौंदने के बावजूद आंहज़रत (स.अ.व.) के धैर्य, हौसला और सहनशीलता के ऐसे-ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि संसार में उनका उदाहरण नहीं मिल सकता। मैं कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ, यद्यपि इसे आंहज़रत (स.अ.व.) की दानशीलता और उपकारों के वृत्तान्तों में वर्णन किया जाता है परन्तु इन्हीं वृत्तान्तों में धृष्टता की सीमा और फिर आप (स.अ.व) के हौसले का भी प्रकटन होता है।

हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ि वर्णन करते हैं – वह कहते हैं कि एक बार वह रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के साथ थे तथा आप के साथ अन्य लोग भी थे। आप हुनैन से आ रहे थे कि जंगली लोग आप से लिपट गए, वे आप से

मांगते थे यहां तक कि उन्होंने आप को बबूल के एक वृक्ष की ओर हटने के लिए विवश कर दिया जिसके कांटों में आपकी चादर अटक गई, रसूलुल्लाह (स.अ.व.) रुक गए और आप ने फ़रमाया मेरी चादर मुझे दे दो, यदि मेरे पास इन जंगली वृक्षों की संख्या के बराबर ऊँट होते तो मैं उन्हें तुम में बांट देता और फिर तुम मुझे कंजूस न पाते और न झूठा और न कायर।

(صحیح البخاری کتاب فرض الخمس باب ماکان النبی عطی المؤلفة قلوبھم وغیرھم--- حدیث نمبر3148)

फिर एक रिवायत हज़रत अनस रज़ि. से है वह वर्णन करते हैं कि मैं नबी करीम (स.अ.व.) के साथ था और आपने एक मोटे किनारे वाली चादर लपेटी हुई थी। एक बद्दू (जंगली) ने उस चादर को इतने ज़ोर से खींचा कि उसके किनारों के निशान आपकी गर्दन पर पड़ गए। फिर उस ने कहा - हे मुहम्मद (स.अ.व.) ! अल्लाह के उस माल में से जो उसने आपको दिया है मेरे इन दो ऊँटों पर लाद दें क्योंकि आप मुझे न तो अपने माल में से और न ही अपने बाप के माल में से देंगे। पहले तो नबी करीम (स.अ.व.) ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया - اَلْمَالُ مَالُ اللّٰہِ وَاَنَا عَبْدُہٗ कि माल तो अल्लाह ही का है और मैं उसका बन्दा हूँ। फिर आपने फ़रमाया - मुझे जो कष्ट पहुँचाया है तुम से उसका बदला लिया जाएगा। उस बद्दू ने कहा नहीं। आप (स.अ.व.) ने पूछा तुझ से बदला क्यों न लिया जाएगा? उस बद्दू ने कहा - इसलिए कि आप बुराई का बदला बुराई से नहीं लेते। इस पर नबी करीम (स.अ.व.) हंस पड़े, फिर आप (स.अ.व.) ने आदेश दिया कि इसके एक ऊँट पर जौ और एक ऊँट पर खजूरें लाद दी जाएं।

(الشفاء لقاضی عیاض جزء اول صفحہ 74 الباب الثانی فی تکمیل اللہ تعالیٰ ------ الفصل واما الحلم------- دارالکتب العلمیۃ بیروت 2002ء)

तो यह है वह धैर्य और सहनशीलता का वह स्थान जो आंहज़रत (स.अ.व.) का था तथा जो अपनों से ही नहीं शत्रुओं से भी था, ये हैं वे सर्वोच्च शिष्टाचार जिन में दानशीलता और परोपकार भी है और सब्र और धैर्य भी तथा उच्च हौसले का प्रकटन भी है। ये आपत्तियां उठाने वाले असभ्य

लोग अज्ञानता की अवस्था में उठते हैं और उस 'रहमतुल्लिल आलमीन' पर आपत्तियां उठाते हैं कि उन्होंने यह सख़्ती की थी और अमुक था और अमुक था।

फिर क़ुर्आन करीम पर आरोप है, सुना है कि जो इस फ़िल्म में लगाया गया है, मैंने देखी तो नहीं है परन्तु मैंने लोगों से यह सुना है कि यह क़ुर्आन करीम भी ख़दीजा के चाचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़िल जिनके पास हज़रत ख़दीजा आप को प्रथम वह्यी के पश्चात लेकर गई थीं उन्होंने लिख कर दिया था। काफ़िर तो आप के जीवन में भी यह आरोप लगाते रहे कि यह क़ुर्आन जो तुम क़िस्तों में उतार रहे हो यदि यह अल्लाह का कलाम है तो एक ही बार में क्यों नहीं उतरा ? परन्तु ये बेचारे बिल्कुल ही अज्ञानी हैं अपितु इतिहास से भी अनभिज्ञ। बहरहाल जो बनाने वाले हैं वे तो ऐसे ही हैं परन्तु दो पादरी जो उनमें सम्मिलित हैं जो स्वयं को विद्वान समझते हैं वे भी ज्ञान की दृष्टि से बिल्कुल ही अनभिज्ञ हैं। वरक़ा बिन नौफ़िल ने तो यह कहा था कि काश मैं उस समय जीवित होता जब तुझे तेरी क़ौम मातृभूमि से निकालेगी और कुछ समयोपरान्त उनकी मृत्यु भी हो गई।

(सही बुख़ारी किताब बदउल वह्यी बाब-3, हदीस न.3)

फिर ये पादरी जैसा कि मैंने कहा इतिहास और वास्तविकताओं से बिल्कुल ही अपरिचित हैं। यूरोपीय जो एशियाई भाषाओं और विद्याओं में पारंगत हैं वे क़ुर्आन के बारे में इस बहस में हमेशा पड़े रहे कि यह सूरह कहां उतरी, मदीना में उतरी या मक्का में ? इस बात पर भी बहस करते हैं और कहते हैं कि यह उसने लिख कर दे दिया था तथा क़ुर्आन करीम का तो अपना चैलेन्ज है कि यदि समझते हो कि लिख कर दे दिया तो फिर उसके समान एक सूरह ही लाकर दिखाओ। तत्पश्चात भावनाओं के सम्मान का प्रश्न पैदा होता है तो उसमें भी आप के समान कोई दूसरा नहीं। इस ज्ञान के बावजूद कि आप समस्त नबियों में सर्वश्रेष्ठ हैं, यहूदी की भावनाओं के सम्मान के बारे में आप फरमाते हैं कि मुझे मूसा पर श्रेष्ठता न दो।

(صحیح بخاری کتاب فی الخصومات باب مایذکر فی الاشخاص والخصومہ--- حدیث نمبر 2411)

ग़रीब लोगों की भावनाओं का ध्यान है, उनके स्तर का आप ने इस प्रकार सम्मान किया कि एक बार आपके एक सहाबी जो मालदार थे वह दूसरे लोगों पर अपनी श्रेष्ठता प्रकट कर रहे थे। रसूले करीम (स.अ.व.) ने यह बात सुन कर फ़रमाया कि क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी यह शक्ति, तुम्हारा यह माल तुम्हें अपने बल पर मिले हैं ? ऐसा कदापि नहीं है, तुम्हारी क़ौम की शक्ति और आर्थिक शक्ति सब निर्धनों के माध्यम से ही आती हैं।

(صحیح البخاری کتاب الجہاد والسیر باب من استعان بالضعفاء والصالحین فی الحرب حدیث نمبر 2896)

स्वतंत्रता के ये दावेदार आज ग़रीबों के अधिकारों को स्थापित करते हैं। उनके अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयास करते हैं और यह घोषणा करते हैं, परन्तु आप (स.अ.व.) ने आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व ये अधिकार यह कह कर स्थापित कर दिए कि मज़दूर की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दो । (سنن ابن ماجہ کتاب الرھون باب اجرالأجراء حدیث نمبر 2443)

ये लोग उस मानवता के उपकारी का कहां-कहां मुक़ाबला करेंगे अनगिनत घटनाएं हैं, आप शिष्टाचार का कोई भी रूप ले लें, उसके उच्च आदर्श आंहज़रत के अस्तित्व में दृष्टिगोचर होंगे।

फिर और नहीं तो यह आरोप लगा दिया कि नऊज़ुबिल्लाह आपको स्त्रियां बहुत पसन्द थीं।

शादियों पर आरोप लगाया तो अल्लाह तआला ने उसका खण्डन भी किया। उसे ज्ञान था कि ऐसी घटनाएं होंगी, ऐसे प्रश्न उठेंगे तो वह ऐसी परिस्थितियां पैदा कर देता था कि इन बातों का खण्डन भी सामने आ गया।

अस्मा पुत्री नौ'मान बिन अबी जौन के बारे में आता है कि अरब की सुन्दरतम स्त्रियों में से थीं, वह जब मदीना आईं तो स्त्रियों ने वहां जाकर उन्हें देखा तो सब ने प्रशंसा की कि ऐसी सुन्दर स्त्री हमने जीवन में नहीं देखी उसके पिता की इच्छा पर आपने उस से पांच सौ दिरहम महर पर निकाह कर लिया, जब आप उसके पास गए तो उसने कहा कि मैं आप से अल्लाह की शरण चाहती हूँ। आप (स.अ.व.) ने यह सुन कर फ़रमाया कि तुम ने

एक महान शरण-स्थली की शरण मांगी है और बाहर आ गए तथा आप ने एक सहाबी अबू उसैद को फ़रमाया कि उसे उसके घर वालों के पास छोड़ आओ, फिर इतिहास में यह भी है कि उस शादी पर उसके घर वाले बहुत प्रसन्न थे कि हमारी बेटी आंहज़रत (स.अ.व.) के निकाह में आई, परन्तु वापस आने पर वह बहुत नाराज़ हुए और उसे बहुत बुरा-भला कहा।

(ماخوذ از الطبقات الکبری لا بن سعد الجزء الثامن صفحہ 319-318 ذکرمن تزوج رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلّم۔۔۔ اسماء بنت النعمان۔ داراحیاء التراث العربی بیروت 1996)

यह है वह महान हस्ती जिस पर घृणित आरोप स्त्री के हवाले से लगाए हैं, जिसका पत्नियां करना भी इसलिए था कि ख़ुदा तआला का आदेश था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो लिखा है - यदि पत्नियां न होतीं सन्तान न होती तथा जो विपत्तियां सन्तान के कारण आईं और जिन का जिस प्रकार प्रकटन किया और फिर पत्नियों से जिस प्रकार का सद्व्यवहार है, आचरण है यह किस प्रकार स्थापित हो, इसके आदर्श स्थापित होकर हमें किस प्रकार ज्ञात होते, आप का प्रत्येक कार्य ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए होता था।

(चश्म-ए-मा'रिफ़त, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 23, पृष्ठ संख्या-300)

हज़रत आइशा रज़ि. के बारे में आरोप है कि वह बहुत लाडली थीं और फिर आयु की दृष्टि से भी बड़ी ग़लत बातें की जाती हैं परन्तु आइशा रज़ि. को आप यह फ़रमाते हैं कि कुछ रातों में मैं सारी रात अपने ख़ुदा की उपासना करना चाहता हूँ जो मुझे सर्वाधिक प्रिय है।

(الدّرّ المنثور فی التفسیر بالماثور لامام السیوطی سورۃ الدّخان ۔۔۔ زیر آیت نمبر 4 جلد 7 صفحہ 350 داراحیاء التراث العربی بیروت 2001)

अत: जिनके मस्तिष्कों में मलिनताएं भरी हुए हैं उन्होंने ये आरोप लगाने ही हैं और लगाते रहे हैं, भविष्य में भी शायद वे ऐसी गतिविधियों में लिप्त रहें जैसा कि मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ, परन्तु अल्लाह तआला ने निर्णय कर लिया है कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों से नर्क को भरता रहेगा। अत: इन लोगों और इन के सहायकों को ख़ुदा तआला के अज़ाब से भयभीत रहना

चाहिए, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि वह अपने प्यारों के लिए बड़ा स्वाभिमान रखता है।

(तिरयाक़ुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-15 पृष्ठ-378)

इस युग में उसने अपने मसीह और महदी को भेजकर संसार को सुधार की ओर ध्यान दिलाया है, परन्तु यदि वे उपहास और अत्याचार से न रुके तो अल्लाह तआला की पकड़ भी बड़ी सख़्त है। संसार के प्रत्येक भाग पर आजकल प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं, हर ओर विनाश है, अमरीका में भी तूफ़ान आ रहे हैं और पहले से बढ़कर आ रहे हैं, आर्थिक अवस्था क्षतिग्रस्त हो रही है, ग्लोबल वार्मिंग के कारण आबादियों के जलमग्न होने का ख़तरा पैदा हो रहा है। अतः इन अतातायियों को ख़ुदा की ओर ध्यान आकृष्ट करने की आवश्यकता है। इन सब बातों को ख़ुदा की ओर फेरने वाला होना चाहिए न यह कि वे इस प्रकार के दुष्कृत्यों की ओर ध्यान दें, परन्तु दुर्भाग्यवश इस के विपरीत हो रहा है, सीमाओं का अतिक्रमण करने के प्रयास किए जा रहे हैं। युग का इमाम सतर्क कर चुका है, स्पष्ट तौर पर बता चुका है कि संसार ने यदि उसकी आवाज़ पर कान नहीं रखे तो उनका हर क़दम संसार को विनाश की ओर अग्रसर करने वाला होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सन्देश जो बार-बार दोहराने वाला सन्देश है अधिकतर प्रस्तुत होता है। आज मैं पुनः प्रस्तुत कर देता हूँ। फ़रमाया कि —

स्मरण रहे कि ख़ुदा ने मुझे सामान्य तौर पर भूकम्पों की सूचना दी है। अतः निश्चय समझो कि जैसा कि भविष्यवाणी के अनुसार अमरीका में भूकम्प आए इसी प्रकार यूरोप में भी आए तथा एशिया के विभिन्न स्थानों में आएंगे और कुछ उनमें से प्रलय का नमूना होंगे और इतनी मौतें होंगी कि रक्त की नहरें चलेंगी, इस मौत से पशु-पक्षी भी बाहर नहीं होंगे और पृथ्वी पर इतनी भयंकर तबाही आएगी कि उस दिन से कि मनुष्य पैदा हुआ ऐसी तबाही कभी नहीं आई होगी तथा अधिकतर स्थान अस्त-व्यस्त हो जाएंगे

कि जैसे उनमें कभी आबादी न थी और इसके साथ और भी आपदाएं पृथ्वी और आकाश में भयंकर रूप धारण कर लेंगी यहां तक कि प्रत्येक बुद्धिमान की दृष्टि में वे बातें आसाधारण हो जाएंगी तथा भौतिकी और दर्शनशास्त्र की पुस्तकों के किसी पृष्ठ में उनका पता नहीं मिलेगा, तब मनुष्यों में बेचैनी पैदा होगी कि यह क्या होने वाला है और बहुत से मुक्ति पाएंगे और बहुत से तबाह हो जाएंगे, वे दिन निकट हैं अपितु मैं देखता हूँ कि द्वार पर हैं कि संसार एक प्रलय का दृश्य देखेगा और न केवल भूकम्प अपितु और भी भयभीत करने वाली आपदाएं प्रकट होंगी, कुछ आकाश से और कुछ पृथ्वी से। यह इसलिए कि मानव जाति में अपने ख़ुदा की उपासना छोड़ दी है और पूर्ण हृदय, पूर्ण साहस और पूर्ण विचारों से संसार पर ही गिर गई है। यदि मैं न आया होता तो इन आपदाओं में कुछ विलम्ब हो जाता परन्तु मेरे आगमन के साथ ख़ुदा के प्रकोप के वे गुप्त इरादे जो एक दीर्ध अविध से गुप्त थे प्रकट हो गए। जैसा कि ख़ुदा ने फ़रमाया —

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا (बनी इस्राईल 16) और तौबा करने वाले सुरक्षा पाएंगे और वे जो आपदा के आने से पूर्व डरते हैं उन पर दया की जाएगी। क्या तुम विचार करते हो कि तुम इन भूकम्पों से सुरक्षित रहोगे या तुम अपने उपायों द्वारा स्वयं को सुरक्षित रख सकते हो कदापि नहीं।

उस दिन मानव-कार्यों का अन्त होगा। यह मत विचार करो कि अमरीका इत्यादि में भीषण भूकम्प आए और तुम्हारा देश उन से सुरिक्षत है ...... हे यूरोप ! तू भी अमन में नहीं और हे एशिया ! तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीप समूहों में रहने वालो ! कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को निर्जन पाता हूँ। वह अकेला और अद्वितीय एक समय तक ख़ामोश रहा ओर उसकी आँखों के सामने घृणित काम किए गए और वह चुप रहा,परन्तु अब वह प्रताप के साथ अपना चेहरा दिखाएगा। जिसके काम सुनने के हों सुने कि वह समय दूर नहीं। मैंने प्रयास किया कि ख़ुदा की सुरक्षा के नीचे सब को एकत्र करूँ,

परन्तु आवश्यक था कि प्रारब्ध के लिखे पूर्ण होते....” फ़रमाया — “नूह का युग तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूत की पृथ्वी की घटना तुम स्वयं अपनी आँखों से देख लोगे, परन्तु ख़ुदा आक्रोश में मन्द है, तौबा करो ताकि तुम पर दया की जाए, जो ख़ुदा को त्यागता है वह एक कीड़ा है न कि मानव, जो उस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि जीवित।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22 पृष्ठ 268-269)

अल्लाह तआला संसार को सद्‌बुद्धि दे, घृणित और अन्यायपूर्ण कामों से बचें तथा अल्लाह तआला हमें भी अपने दायित्व पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करता रहे।